"तुम्हें क्या फिक्र"

एन. प्रसाद खर्कवाल
रूड़की

देश लुटता है लुटने दो, तुम्हें क्या फिक्र
लड़ते रहो नाम बिके अल्प संख्यक, वोट बैंक भरते रहो।

हिन्दु मरे, या इसाई या मुस्लिम भाई
तुम्हें तो केवल फिक्र है वोट की नोट की।

शासन में बना रहे तुम्हारा परिवारवाद
खूब फायदा उठाओं जब तक रहेगा तुम्हारा राज परिवार।

बलवा कराते हो, बदनाम हों बहुसंख्यक
देश लुटता है लुटने दो, तुम्हें क्या फिक्र।

सभी तो आपके है कालू–सालू अन्य सहित
एक से एक बढ़कर गरीब की ओर गरीब बनाकर पटकनी देते हो
देश लुटता है लुटने दो, तुम्हें क्या फिक्र

फिक्र तो गरीबन को होगी, जिसके घर में न चुल्हा और न चक्की
अगर यह होती भी तो तुम न रहने देते।

तुम्हे तो फिक्र अपनी है, कैसे बना रहे वंशवाद,
मेरी धरती मेरा भारत मैं बना रहूं महान।

बहुत सारे आधुनिक जयचंद, नाम के देश भगत
नाम कहां–कहां तक गिने, सभी है एक थाली के चट्टे–बट्टे
देश लुटता है लुटने दो, तुम्हें क्या फिक्र।

कहीं चारा घोटाला, कहीं कोयला घोटाला, घोटालों पर घोटाला
मजे में चल रही होगी, इनकी तो मधुशाला।

परंतु तुम्हें कोई फिकर न जाने, कब तक चलता रहेगा ऐसा
काली कमाई वालो का बढ़ता रहेगा रूपया पैसा
देश लुटता है लुटने दो, तुम्हें क्या फिक्र।